IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 10, Issue 7, July 2021

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.569

9940 572 462 | 6381 907 438 | ijirset@gmail.com | www.ijirset.com

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 7, July 2021 ||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2021.100327 |

वैदिक साहित्य में वर्णित वनस्पतियाँ

डॉ. मनीष कुमार सिंह

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, का. सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या

सार

भारतीय मन आदि सनातन काल से ही प्रकृति के प्रति संवेगित व संवेदनशील रहा है और प्रकृति तथा पर्यावरण के साथ समन्वय, सामंजस्य व संतुलन स्थापित कर प्रकृति संरक्षण के प्रति कृत संकल्पित होकर जिओ और जीने दो के सिद्धांत पर चलना ही भारतीय जीवन पद्धति हैद्य मनुष्य का प्राकृतिक जीवन व्यतीत करना भारतीय जीवन पद्धति के साथ ही सम्मिश्रित हैद्य इसीलिए प्रकृति पर निर्भर स्वस्थ जीवन पद्धति और चिकित्सा विज्ञान भारतवर्ष के प्राचीनतम ज्ञान में सन्निहित रही हैद्यऋग्वेद, अथर्ववेद, आयुर्वेद तथा स्वास्थ्य व चिकित्सा के लिए विख्यात विभिन्न पुरातन ग्रन्थ इसके स्वयं साक्षी हैंद्य वनस्पतियों की महता व रोगों के उपचारार्थ कई प्रकार की जड़ी-बूटियोंका वर्णन अथर्ववेद के साथ ही कई अन्य पुरातन ग्रंथों में अंकित हैंद्ययह शाश्वत्त सत्य है कि इस पृथ्वी पर प्राणिजगत का इतिहास जितना पुरातन है, उससे कहीं अधिक प्राचीन वृक्ष और वनस्पतियों का अस्तित्व है, और पुरातन काल से लेकर आज तक इनसे और इन पर ही हमारा अस्तित्व निर्भर है।

परिचय

यह पृथ्वी आज यदि जीवन्त प्रतीत हो रही है, तो उसका सर्वाधिक श्रेय वनस्पति को दिया जा सकता है। यही कारण है कि वनस्पतियों के महत्त्व को प्रतिपादित करता हुआ वेद वनस्पतियों को दिव्य गुण वाली माता के रूप में प्रतिपादित करता है।[1]

ओषधीरिति मातरस्तद्वो देवीरुप ब्रुवे।- ऋग्वेद 10.97.4

माता कहने से यहाँ अभिप्राय यह है कि जिस प्रकार माता शरीर का निर्माण करती है, उसी प्रकार वनस्पतियों की भी शरीर निर्माण में भूमिका है। इसलिये ऋग्वेद का यही मन्त्र में आगे इनकी सेवा के लिये गौ, अश्व और अपने तक को समर्पित करने की बात कहता है।

सनेयमश्वं गां वास आत्मानं तव पूरुष।- ऋग्वेद 10.97.4

मैत्रायणीसंहिता 4.1.13के अनुसार अग्नि से मेध निकलता है और वह कृष्ण होकर वनस्पतियों में प्रवेश कर जाता है।कहने का आशय यह है कि अग्नि से निकलने वाली कृष्णवर्ण की कार्बन डाई ऑक्साइड गैस को वनस्पतियाँ अवशोषित कर लेती हैं। अथर्ववेद का ऋषि कहता है कि विश्व का भरण-पोषण करने वाली पृथिवी तुम्हारी हरित के माध्यम से रक्षा करे।

भूमिष्ट्वा पातु हरितेन विश्वभृद्।- अथर्ववेद 5.28.5

उक्त मन्त्र में आया बहुत महत्त्वपूर्ण हरित शब्द का अर्थ होता है- हरण करने की सामथ्र्य से युक्त।अन्धकार या रस का हरण करने के कारण जहाँ आदित्य रश्मियाँ हरित हैं, वहीं प्राणियों की क्षुधा का हरण करने के कारण वृक्षादि वनस्पतियाँ हरित कहलाती हैं। हरित शब्द वेद में पीत वर्ण या स्वर्णिम आभा का वाचक है। प्राचीन काल से ही स्वर्ण या स्वर्णिम आभा समृद्धि का प्रतीक रही है। जहाँ स्वर्ण से नारी सौन्दर्य मुखरित हो उठता है, वहीं पृथ्वी रूप रमणी की शोभा जिस समृद्धि से दर्शनीय बन पड़ती है, वह शस्य श्यामलता सम्पन्नता भी वेद में हरित नाम से अभिहित हुई है। उक्त मन्त्र के माध्यम से आगे वेद कहता है कि वृक्ष और वनस्पतियाँ सूर्य की किरणों के सहयोग से कल्याणकारी शक्ति को धारण करायें-

वीरुद्भिष्टे अर्जुनं संविदानं दक्षं दधातु सुमनस्यमानम।।

– अथर्ववेद 5.28.5

सूर्य की किरणों के सम्पर्क से वृक्ष और वनस्पतियों में प्रकाश-संश्लेषण की क्रिया होती है, जिससे वनस्पितियों को ऊर्जा मिलती है। वस्तुत: यह ऊर्जा प्रकारान्तर से शाकाहारी प्राणियों को प्राप्त होती है, और उनसे भी यह मांसाहारी जीवों तक पहुँचती है। एक प्रकार से वनस्पतियाँ सूर्य की ऊर्जा को हमारे पास पहुँचाने का माध्यम हैं। इसलिये वेद सूर्य को स्थावर और जङ्गम जगत की आत्मा कहता है।

सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा।

-यजुर्वेद 7.42

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि वनस्पति जगत हमारी एक ऐसी अपरिहार्य आवश्यकता है, जिसका विकल्प मनुष्य के पास न पहले कभी था और न आज है।वेदों में पृथ्वी की उर्वरा शक्ति के प्रति जिस संवेदनशीलता का परिचय दिया गया है, वह वनस्पति जगत की सुरक्षा को दृष्टि में रखते हुए बहुत महत्त्वपूर्ण है। अथर्ववेद 12.1.35 मेंऋषि भूमि माता के प्रति कृतज्ञतापूर्ण संवेदना से ओत प्रोत

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 7, July 2021 ||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2021.100327 |

होते हुए कहते है कि –
यत्ते भूमि विखनामि क्षिप्रं तदतु रोहतु।
मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम्।।
– अथर्ववेद 12.1.35
अर्थात – हे भूमि! मैं तेरा जो भी भाग खोदूँ अर्थात् तेरी क्रोड़ में से मैं जो भी सम्पदा निकालूँ, उससे वह शीघ्र ही पुन: पूर्ण हो जाए। हे अन्वेषण करने योग्य भूमि! मैं न तो तेरे मर्मस्थल को चोट पहुँचाऊँ और न ही तेरे हृदय को पीड़ित करूँ। वेद पृथ्वी पर उगने वाली सस्य सम्पदा को चार भागों में विभाजित करता है-वनस्पति,वानस्पत्य, ओषधि और वीरुध।[2,3]
वनस्पतीन् वानस्पत्यानोषधीरुत वीरुधै:।
द्विपाच्चतुष्पादिष्णामि यथा सेनाममूं हनन्।।
– अथर्ववेद8.8.14
बड़े वृक्ष वनस्पति कहलाते हैं, जबकि उनकी अपेक्षा छोटे वृक्षों को वानस्पत्य कहा गया है। इसी प्रकार ओषधि (औषधि) कहे जाने वाले वर्ग के भी दो भेद हैं-छोटे पौधे के रूप में उगने वाली वनस्पति औषधि है, जबकि लता गुल्म आदि के रूप में विकसित होने वाली वनस्पति वीरुध है। इसके अतिरिक्त औषधि और वीरुध में यह भी भेद है कि जो वनस्पतियाँ रोगनिरोधक हैं, वे वीरुध नाम से अभिहित हुई हैं और जो रोग का शमन करती हैं, वे औषधि कही गयी हैं। ऋग्वेद के औषधिस्तुतिविषयक सूक्त में उपर्युक्त चार भेद और स्वीकार किये गए हैं- **फलवती,अफला, पुष्पवती औरअपुष्पा।**
या: फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी:।
– ऋग्वेद 10.97.15

इनके विषय में इसी मन्त्र में आगे कहा गया है कि बुद्धिमान् चिकित्सक के द्वारा प्रयुक्त किये जाने पर ये हमें अंहस् अर्थात् रोग से मुक्त करें।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहस:।।
– ऋग्वेद 10.97.15

वैदिक ग्रन्थों में औषधियों की विशेषताओं का भी विस्तार से वर्णन किया गया है।ओषधियों की विशेषताओं को प्रतिपादित करते हुए ऋग्वेद में कहा गया है –
ओषधी: प्रति मोदध्वं पुष्पवती: प्रसूवरी:।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुध: पारयिष्णव:।।
-ऋग्वेद 10.97.3
अर्थात – ये औषधियाँ फूलवाली और बीजवाली (प्रसूवरी) हैं। जिस प्रकार अश्व मार्ग को व्याप्त कर लेते हैं, उसी प्रकार ये औषधियाँ शरीर में व्याप्त होकर रोग का निरोध करती हैं, प्रयोग के साथ ही तुरन्त रोगों को जीतने वाली तथा रोग के पार ले जाने वाली हैं, ऐसी औषधियाँ खूब फलें-फूलें।
इनकी उपयोगिता को देखते हुए वैदिक ग्रन्थों में इन्हें माता की संज्ञा दी गई है।वेद का ऋषि अम्ब अर्थात् माता का सम्बोधन करता हुआ इनके विषय में कहता है –
शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुह:।
अधा शतक्रत्वो यूयमिमं मे अगदं कृत।।
– ऋग्वेद 10.97.2
अर्थात- ये माता के समान निर्माण करने वाली, सेवन करने के योग्य औषधियाँ बहुत से स्थानों में उगती हैं और इनके बहुत से उगने के क्रम हैं। इसके अतिरिक्त ये बहुत कर्मवाली और बहुत उपयोग वाली हैं।
अत: वह इनसे रोगरहित करने की प्रार्थना करता है।ऋग्वेद 10.97.4माता के रूप में चित्रित करते हुए इन्हें दिव्य गुणवाली कहता है।एक अन्य मन्त्र ऋग्वेद 10.97.5में कहा गया है कि चिकित्सक के द्वारा सुप्रयुक्त तथा रोगी के द्वारा नियमित रूप से सेवित ये औषधियाँ रोग दूर करती हैं।[4,5]

विचार - विमर्श

गूलर : 'गूलर' को 'विष्णुसहस्रनाम' में विष्णु का रुप माना गया है। गूलर को 'व्रण वृक्ष' माना गया है। भगवान नृसिंह ने अपने नखों की गरमी को (क्रोध के ताप को) गूलर के वृक्ष में गाड़कर शांत किया था, इसलिए इसका फल विरस हो गया तथा 'व्रण' के रुप में कीड़े भी उत्पन्न हो गए। गूलर के नीचे सैयद का थान होता है-'गूलरिया धुकधालरी म्वाँ सैयद कौ थान।'

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 7, July 2021 ||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2021.100327 |

शमी (छोंकरा) : दाहरा (आश्विन) के दिन स्त्रियाँ शमी (छोंकरा के पेड़) की पूजा करती हैं। यज्ञ में 'अरणिमंथन' के लिए इसी की लकड़ी ली जाती है। विवाहों में 'वरमनियाँ' को 'बभ्रावाहन' (बर्बरीक) का रुप माना जाता है। लोक-कथा है कि श्रीकृष्ण ने बभ्रावाहन को यह वरदान दिया था कि तेरी पूजा छोंकर के वृक्ष पर होगी।

आँवला : आँवले के वृक्ष पर देवताओं और ब्रह्माजी का निवास माना जाता है। पुराकथा के अनुसार यह गौरी के तेज से उत्पन्न होनेवाला वृक्ष है। अखयनवमी (कार्तिक शु. नवमी) के दिन कुमारियाँ घी-गुड़ से इसकी पूजा करती हैं तथा कच्चे सूत के साथ परिक्रमा करती हैं। इतवार के दिन आँवले का नाम लेना निषिद्ध है।

अंडी (एरंड) : गाँवों में बसंत पंचमी के दिन होरी का 'डाँड़ा' गढ़ता है। लक्कड़ों के बीच में 'अंडी' के पेड़ के लगा देते हैं। जब होली जलाई जाती है, तब इसे निकाल लिया जाता है, यह प्रह्मलाद का प्रतिरुप माना गया है।[6,7]

आक : श्रावण शुक्ल षष्ठी को 'अकौआ छट' कहा जाता है। इस दिन आरोग्य-कामना से सूर्य के नामों से आक की पूजा की जाती है। यह स्वर्ग का वृक्ष माना जाता है। जब कोई तीसरा विवाह करता है, तो पहले उसका विवाह आक से होता है। इसका नाम मंदार भी है।

केला : बृहस्पतिवार को स्त्रियाँ सौभाग्य-कामना से गुड़ और चने की दाल से केले की पूजा करती हैं तथा कच्चा सूत लपेटकर परिक्रमा करती हैं।

नीम : नीम के पेड़ पर भैरव का निवास माना जाता है। विश्वास किया जाता है कि स्नान करके नीम पर जल चढ़ाने से दुख-दरिद्रता दूर हो जाती है। यह शीतला माता का प्रिय वृक्ष है।

कदंब : कंदब वृक्ष एक ओर कृष्ण-लीला के संदर्भ से जुड़ा है-'बैठो कदम की डारी कदम बिच बनवारी', 'कालिंदी कूल कदंब की डारन', 'कदम चढ़ कान्ह बुलावत गइयाँ'। 'टेर कदम्ब' प्रसिद्ध है। दूसरी ओर भगवती जगदंबा भी कदंबवन-वासिनी हैं। भगवती का चिंतामणिगृह कदंबों से घिरा है-मणिद्वीपे नीपोपवनवति चिंतामणिगृहे। कंदब वृक्ष विश्व वृक्ष है तथा इस पर लोहितायनि (कार्तिकेय की धाय) की पूजा होती है।

बेल : बेल का वृक्ष शंकर को भी प्रिय है और लक्ष्मी को भी। ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को ज्येष्ठा नक्षत्र में सरसों मिले जल से इसकी पूजा होती है, माना जाता है कि जो इस प्रकार पूजा करे, वह स्री विधवा नहीं होती। 'बेल वृक्ष' की पूजा करने से धन और पुत्र की भी प्राप्ति होती है। इसकी तीन पत्तियाँ मिली हुई होती हैं, इन्हें बेलपत्र (बेल पत्थर भी) कहते हैं और शिव की पूजा में बेलपत्र का महत्त्व उसी प्रकार का है; जैसे- शालिग्राम पूजा में तुलसीदल का। एक कथा है कि एक भील बेल पर चढ़ उसके पत्र तोड़-तोड़कर गिरा रहा था, नीचे शिवलिंग था। भगवान शंकर इस कृत्य से भील पर प्रसन्न हो गए।[8,9]

आशय

लोक अनुष्ठानों की परंपरा बहुत प्राचीन है। इसलिए इनमें प्राचीन संस्कृति के अवोष विद्यमान हैं और प्राय: सभी अनुष्ठानों में वृक्ष-वनस्पति किसी न किसी रुप में उपस्थित है। अनुष्ठान जीवन के प्रत्येक सन्दर्भ से जुड़े हुए हैं-सुख हो या दुख हो, धन सम्पत्ति का अभाव हो, संतान का अभाव हो, रोग हो, शोक हो अथवा जन्म से लेकर मृत्यु तक कोई संस्कार हो, मांगलिक अनुष्ठान हो। व्रत, उपवास, तीर्थ, यज्ञ, श्राद्ध, दिन, तिथि, महीना और ऋतु, पर्व और त्यौहार-प्रत्येक अवसर का एक विाष्टि विधि-विधान है और प्रत्येक विधि-विधान के साथ लोकमानस की इच्छा, आकांक्षा और कामनाएँ अनुस्यूत हैं। प्रत्येक अनुष्ठान की कुछ विाष्टि रहस्यात्मक क्रियाएँ हैं। प्रत्येक अनुष्ठान का कोई न कोई देवता है और विशिष्ट सामग्री है।

कमल : भारतीय संस्कृति में कमल सृष्टि का प्रतीक है। ब्रह्मा की उत्पत्ति कमल से मानी गयी है। यह कमल विष्णु का नाभि से उत्पन्न हुआ था। लक्ष्मी का नाम कमला है, उसका निवास कमल-वन में है, उनका आसन भी कमल है, उनके हाथ में कमल का ही आयुध है। लक्ष्मी को पद्मा, पद्मायताक्षी, पद्महस्ता, पद्मप्रिया, पद्मसंभवा कहा गया है। विष्णु के हाथ में भी पद्म है और चरणों में भी पद्मचिन्ह हैं। भगवती सरस्वती 'श्वेत पद्मासना' हैं। राधा के हाथों में भी लीला-कमल है। महाभारत (वन. १५४/२०.२१) में प्रसंग है कि कुबेर के पास सौगंधिक कमलों का सरोवर था और भीम कमल लेने गए थे। योग शास्र में षट्चक्रों की परिकल्पना कमलों के रुप में की गयी है।

वृंदावन के लता-पता और वृक्षों को ऋषि-मुनि माना जाता है। भागवत में उल्लेख है कि स्वयं उद्धव ने वृंदावन की गुल्म लतौषधि बनने की कामना की थी।

ब्रज की लता-पता मोहि कीजै।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 7, July 2021 ||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2021.100327 |

आसामहोचरण रेणुजुषामहं स्याम
वृंदावने किमपि गुल्मलतौषधीनाम्।

रसिक भक्त इन लताओं को 'सखी' रुप मानते हैं, जो यामा-याम के लीला विहार की सहायक एवं साक्षी हैं। वृंदावन के भक्त ब्रजलताओं के साथ निवास को अपने जीवन का सौभाग्य मानते हैं।[10,11]

बास करै ब्रज लतन सँग माँग मधुकरी खाँय।
वृंदावन के वृक्षों की महिमा संबंधी कहावत है-

वृंदावन के बिरछ कौ मरम न जानें कोय।
डार-डार अरु पात-पात पै राधे-राधे होय।

रुद्राक्ष : एकमुखी 'रुद्राक्ष' को गौरी शंकर कहते हैं। रुद्राक्ष के दाने पर शिव की पूजा होती है। पुराणों में रुद्राक्ष की महिमा का विस्तार से वर्णन किया गया है। रुद्राक्ष धारण करने से सौभाग्य प्राप्त होता है।शिव पर केतकी का फूल नहीं चढ़ाया जाता क्योंकि एक कथा के अनुसार 'शिवलिंग' का आदि और अंत ब्रह्मा ने खोज लिया है' ऐसी झूठी गवाही देने के कारण केतकी को यह शाप दिया गया था।[12,13]

बाँस :भगावत-माहात्म्य के प्रसंग में गोकर्ण का भाई 'धुंधकारी' प्रेत बना और उसने सात गाँठों के बाँस में प्रवे करके भागवत सप्ताह सुना था।-३० भागवत सप्ताह के आयोजन में एक बाँस प्रतिष्ठित किया जाता है।

कल्पवृक्ष : देववृक्ष : गायों में जो स्थान सुरभि नामक गौ का है, वृक्षों में वैसा ही स्थान पारिजात अथवा कल्पवृक्ष का है। 'सुरभि' स्वर्ग की गाय है तथा उसे कामधेनु कहा जाता है, पारिजात उसी प्रकार स्वर्ग का वृक्ष है। जिस प्रकार कामधेनु सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करनेवाली है, उसी प्रकार कल्पवृक्ष भी सम्पूर्ण इच्छाओं को पूरा करनेवाला तथा समस्त अभावों को दूर करनेवाला है। पुराकथाओं की भाँति ही लोक कहानियों में भी इसका प्रसंग आता है और जहाँ भी इसका प्रसंग आता है वहाँ पर अभिप्राय जुड़ा रहता है कि किसी व्यक्ति ने कल्पवृक्ष के नीचे जो संकल्प किया, जो इच्छा की, वह पूर्ण हो गयी। भगवान् को 'वांछा कल्पतरु' कहा गया है तथा जगदंबा को 'कल्पलता' नाम से भी अनेक ग्रंथ रचे गए हैं, स्तोत्र ग्रंथ उपलब्ध होते हैं तथा 'कल्पद्रुम' नाम से भी अनेक ग्रंथ रचे गए हैं, जैसे- शब्दकल्पद्रुम, काव्यकल्पद्रुम आदि। 'कल्पवृक्ष' उन 'चौदह रत्नों' में से एक है, जो समुद्र-मंथन के माध्यम से प्रकट हुआ था। 'पारिजात वृक्ष' नंदन वन में था और इस वृक्ष को स्वर्ग से द्वारका में लाने के लिए कृष्ण का इंद्र से युद्ध हुआ था और कृष्ण ने इंद्र को परास्त किया था। कृष्ण के परमधाम गमन के बाद इंद्र इस पुन: स्वर्ग ले गया, ऐसा उल्लेख भी पुराकथाओं में विद्यमान है।

मलिक मुहम्मद जायसी ने अपने 'पद्मावत' में 'कंचनवृक्ष' का वर्णन किया है, यह वर्णन बहुत कुछ कल्पवृक्ष की परिकल्पना से मिलता-जुलता है-

और कुंड एक मोंती चूरु, पानी अंब्रित कीच कपूरु।
ओहिक पानी राजा पैं पिया, बिरिध होइ नहिं जो लहि जिया।
कंचन बिरिख एक तेहि पासा, जस कल्पतरु इंद्र का विलासा।
मूल पताल सरग ओहि साखा, अमर बेल पाव को चाखा।
चाँद पात औ फूल तुराई, होइ उजियार नगर जहँ ताई।
वह फर पावै ताप कें कोई, बिरिध खाय नव जोबन होई।
राजा भये भिखारी सुनि वह अंब्रित भोग।
जेहि पावा सो अमर भा न किहु व्याधि न रोग
महात्रिपुर सुंदरी के मणिद्वीप की परिकल्पना में कल्पवृक्षों के वन हैं-

सुधासिंधोर्मध्ये सुरविटपवाटी परिवृते।

कल्पवृक्ष का विश्वास 'वृक्ष में परिपूर्णता-सम्पूर्णता' का विश्वास है। अनेक साहित्य-मनिष्यों ने मन तो ही कल्पवृक्ष कहा है।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 7, July 2021 ||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2021.100327 |

ब्रजमंडल में प्राय: घरों में 'तुलसी' का 'थामरा' होता है। स्त्रियाँ श्रद्धापूर्वक उस पर जल चढ़ाती हैं तथा दीपक जलाती हैं। तुलसी की पूजा का विोष अनुष्ठान कार्तिक के महीने में होता है। 'कार्तिक स्नान' करके स्त्रियाँ 'राई दामोदर' की पूजा करती हैं तथा तुलसी के पौधे को बीच में रखकर कथा-कहानी सुनाती हैं।-३ तुलसी के विवाह तथा गौने (द्विरागमन) के गीत गाए जाते हैं-

'हो राम डूँगर खटकी में सुनी और नद जमना के तीर' इस गीत में कहानी है कि जब तुलसी सिर पर गागर लेकर यमुना-किनारे गई, तो 'रुक्मणी' ने तुलसी को पकड़कर हिला दिया और उसके जेवर तथा चूड़ियाँ तोड़ डालीं, गागर लुढ़का दी और तुलसी के पिता को गालियाँ दी। श्रीकृष्ण आए और उन्होंने पूछा कि-'तुलसी, आज तुस इतनी अनमनी क्यों हो ?' तुलसी ने कहा-'हे कृष्ण, तुमरी रुकमिन लाड़ली और हम डारीं झकझोर।' कृष्ण बोले-'तुलसी, मेरी सबसे प्रिय तो तुम्हीं हो और तुम्हें मैं हृदय में धारण करता हूँ।' स्मरणीय है कि ' शालिग्राम' की पूजा तुलसीदल से होती है। शालिग्राम शिला पर एक सौ आठ तुलसीदल चढ़ाने का अनुष्ठान किया जाता है।[14,15]

एक अन्य गीत में 'राधा' और तुलसी के सपत्नी-भाव की चर्चा है, जिसमें एक धोबी कृष्ण और तुलसी के प्रेम के रहस्य को प्रकट कर देता है। राधा श्रीकृष्ण से उनके माथे पर तिलक, मेहँदी का पत्ता, पैरों में महावर तथा दुपट्टा में लगे दाग का रहस्य पूछती है। कृष्ण सभी बातों का उत्तर देकर कहते हैं कि दुपट्टा धोबी के यहाँ बदल गया। राधा धोबी को बुलाकर पूछती है, तो धोबी कृष्ण और तुलसी के प्रेम-प्रसंग को प्रकट कर देता है।

एक कथा के अनुसार वृन्दा ने कृष्ण की तपस्या करके वरदान माँगा था कि 'मैं तुम्हारी लीला के लिए निकुंज बनाऊँगी, उस उपवन में छ: ऋतुएँ एकसाथ रहेंगी, तुम उस निकुंज में राधा के साथ बिहार करना।' ये ही वृंदावन की निकुंजें हैं।

कार्तिक मास में 'देवठान-एकाद शी' को तुलसी-ािलिग्राम के विवाह का अनुष्ठान किया जाता है। उसमें गीत गाया जाता है-

आसाढ़े उजियारी तीजा लै रे बोवउ रानी तुलसी के बीजा ।
जोतहु बोवहु करहु कियारियाँ धनि जा मलिया के बेटाहू जायौ
तुलसी कौ बिरवा सींच जमायौ।
सावन तुलसा पात-दुपाती, भादों तुलसा गहर गँभीरी
क्वार में तुलसा कान कुँवारी कातिक तुलसा कौ रचौ विवाहु।

इस गीत में तुलसी की माँ धरती और पिता इंद्र बताए गए हैं।

तुलसी की आरती का गीत है-

तुलसा की मंजरि तोरि श्रीकृष्ण चढ़ाइयौ ।
श्रीकृष्ण चढ़ाइ परमपद पाइयौ ।
कुसुमी चीर पहराय तुलसीदे कों व्याहिये ।

एक पुराकथा के अनुसार 'वृंदा' शंखचूड़ असुर की पतिव्रता पत्नी थी, जिसकी वजह से वह अजेय था। उसका सतीत्व खंडित करने के लिए श्रीहरि ने शंखचूड़ दानव का रुप धारण किया और उसके पतिव्रत को भंग किया। तब वृंदा ने श्रीहरि को शालिग्राम शिला होने का शाप दिया और शिव ने वृंदा को जड़ (वनस्पति) होने का शाप दिया।एक अन्य पुराकथा के अनुसार 'तुलसी' 'जालंधर' दैत्य की पत्नी तथा 'कालनेमि' की पुत्री थी। जालंधर की मृत्यु के पचात् इसने अग्नि-प्रवे श किया था। इसकी पति-भक्ति से 'विष्णु' प्रसन्न हुए। इसके अग्नि-प्रवश् के स्थान पर 'गौरी' के अ शं से आँवला, 'लक्ष्मी' के अं श से तुलसी तथा 'स्वरा' के अं श से मालती के पेड़ उत्पन्न हो गए। पंजाब में जालंधर में तुलसी का प्रसिद्ध मंदिर है।पुराणों में तुलसी को वृंदा के पसीने से उत्पन्न बताया गया है, एक कथा के अनुसार 'समुद्रमंथन'के अवसर पर जब अमृत बाहर आया तो उसकी बूँद जमीन पर गिरी। उस बूँद से तुलसी का पेड़ उत्पन्न हुआ, जो 'ब्रह्मा' ने 'विष्णु' को दिया।-९ तुलसी का भगवान के चरणों में निवास है, लक्ष्मी का भी निवास भगवान के चरणों में है, इसलिए तुलसी को 'लक्ष्मी' की सौत मान गया है।[16,17]

ब्रज में जब 'ठाकुरजी' को भोग समर्पित किया जाता है तब भोग में तुलसी-दल डाला जाता है, क्योंकि उसे बिना वे भोग स्वीकार नहीं करते-

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 7, July 2021 ||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2021.100327 |

छप्पन भोग छतीसौ व्यंजन बिन तुलसा हरि एक न मानी
नमो-नमो। तुलसा महारानी नमो-नमो

'चरणामृत' में भी तुलसीदल होता है। विवाहों में तेल चढ़ाया जाता है, 'तेल चढ़ाने' के समय गीत गाया जाता है-

ए हरि नवन सँजोय तुलसा पलोटै हरि के पाँय हो।

कार्तिक में कही जानेवाली तुलसी की एक कहानी है कि 'एक घर में ननद-भावज थीं। कुँआरी ननद तुलसी की पूजा करती थी, जब ननद का विवाह हुआ तो भाभी ने बरातियों के आगे गमला तोड़कर डाल दिया, जो पकवान के रुप में बदल गया, तुलसी की मंजरी गहना बन गई ।

'रामचरितमानस' में प्रसंग है कि 'लंकापुरी' में 'विभीषण' के घर पर हनुमान ने तुलसी के पौधे देखे और अनुमान किया कि अवय ही यहाँ किसी भक्त का निवास है-

नव तुलसी के वृंद बहु लखि हरसे कपिराय ।

वैष्णव लोग तुलसी की कंठी पहनते हैं तथा तुलसी की माला पर ही जप करते हैं। मृत्यु के समय मुख में गंगाजल और तुलसीदल जाला जाता है और विश्वास किया जाता है कि ऐसा करने से 'बैकुंठ लोक' प्राप्त होता है।[18,19]

परिणाम

पीपल वृक्ष का उल्लेख वैदिक-साहित्य में है।गीता में श्रीकृष्ण ने पीपल को अपना ही प्रतिरुप बताया है , तथा लोकजीवन में उसे विष्णु-नारायण एवं वासुदेव-वृक्ष माना जाता है। पीपल सतयुग का वृक्ष है। भगवती 'जालपा देवी' के भवन के द्वार पर पीपल और 'पिछवारे' वट का वृक्ष है।

पीपल वृक्ष पर शनि, नाग देवता, पीर, लक्ष्मी, भूत-प्रेत तथा पितृश्वर देवताओं का निवास माना जता है। शनिवार तथा 'अमावस्या' को संतान की कामना तथा 'ग्रहदोष' एवं 'अनिष्ट-निवारण' के लिए पीपल की पूजा की जाती है। गाँवों में प्राय: पीपल के नीचे छोटे-छोटे पत्थर रखे होते हैं, यह वास्तव में 'चैत्य-पूजा' की परंपरा का रुप है। भैंस अथवा गाय के 'ब्याने' पर (बच्चा होने पर) एवं नई फसल आने पर सबसे पहले देवपूजा का भाग पीपल के 'चैत्य' पर चढ़ाया जाता है।एक लोक कहानी है कि एक लड़की पीपल को जल चढ़ाने जाया करती थी तो 'लक्ष्मी' उसके पीछे जाकर उसके घर का सारा काम कर दिया करती थी।-१४ लोकमानस में पीपल को शनि के रुप में पूजा जाता है। ब्रज की एक लोककथा में एक महिला पीपल से 'गोद भरने' की याचना करती है-

पीपर देउ सनीचर देउ मेरी गोद में लरका देउ

पीपल के प्रसाद से जब ननद के भी लड़का हुआ तो भाभी न पति से शंका की। भाई को भी विश्वास नहीं हुआ, तब पीपल का तना फटा और बालक उसमें समा गया। इस दुर्भाव के कारण भाई को 'कुष्ठ' हो गया तब वह पुन: पीपल से 'सत' के भांजे को माँगने गया।-१५ इस कहानी में पीपल गोत्र का महत्त्वपूर्ण संकेत है। 'सासनी' के पास 'बिजाहरी' गाँव के जाटव बिरादरी के एक महानुभाव ने पीपल 'गोत्र' का उल्लेख किया था।[20,21]

जब 'मुगल' देवी के 'मढ़' के द्वार पर स्थित 'हरियल पीपर' काटने को उद्यत हुआ-'हरियल पीपर ग्वाइ कटवाय दउँ तब मानैं मन मेरौ' तब लाँगुरिया ने उसे सावधान किया। पीपल काटने के कारण 'मुगल' नष्ट हो गया। पीपल की लकड़ी जलाने का दोष माना जाता है, विश्वास किया जाता है कि पीपल काटने से कोढ़े हो जाता है।लक्ष्मी, शनि तथा देवी के अतिरिक्त 'पितृपूजा' में भी पीपल का महत्त्व है। 'पितृश्वरों' को तृप्त करने के निमित्त मृत्यु के बाद दस दिनों तक एक जल से भरा घड़ा पीपल पर टाँग दिया जाता है।-१७ प्रेत अपनी मुक्ति के लिए स्वप्न देता है कि मेरी मुक्ति के लिए पीपल का वृक्ष लगवाओ।यदि छोंकर (शमी वृक्ष) पर पीपल का वृक्ष उत्पन्न हो जाता है तो उसे 'नर-नारायण' का वृक्ष कहते हैं।उसी वृक्ष की सूखी लकड़ी से यज्ञ में 'अरणि-मंथन' (लकड़ी के घर्षण से अग्नि की चिनगारी उत्पन्न होती है, उससे यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित की जाती है) करने का विधान है।' नाग पूजा' का दूध भी पीपल पर चढ़ाया जाता है। पुराणों में पीपल को विष्णु का रुप कहा गया है-

मूले विष्णु: स्थितो नित्यं स्कंधे कोव एव च।
नारायणस्तु शाखासु पत्रेषु भगवान् हरि:।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|
|| Volume 10, Issue 7, July 2021 ||
|DOI:10.15680/IJIRSET.2021.100327 |

फलेऽच्युतो न सन्देह: सर्वदेवै: समन्वित:।
स एव विष्णुर्द्रुम:। - (स्कंद पुराण)

एक पुराकथा है कि शिव-पार्वती की रतिक्रीड़ा में अग्नि ने बाधा डाली तब पार्वती ने सभी देवताओं को वृक्ष बन जाने का शाप दिया, परिणामस्वरुप ब्रह्मा पीपल बने और विष्णु वट। एक कथा के अनुसार लक्ष्मी की बड़ी बहन 'दरिद्रा' एक बार रुठकर पीपल के नीचे जा बैठी। शनिवार के दिन लक्ष्मी उससे मिलने आयी, इसलिए शनिवार को तो पीपल लक्ष्मीप्रद होता है तथा अन्य दिनों उसका स्पर्श करने का निषेध है। भूत-प्रेत तथा दरिद्रा के निवास के कारण पीपल को गृहस्थ घर में रखने का निषेध है।[22,23]

भगवान शिव पीपल के नीचे ध्यानमग्न रहते हैं। जब भगवान कृष्ण पीपल वृक्ष में बैठे थे, तभी उनके पैर में बहेलिया का बाण लगा था तथा उनका परमधाम गमन हुआ।-१९ गोस्वामी तुलसीदास के संबंध में किंवदंती है कि वे जिस पीपल पर पानी चढ़ाते थे, उसी के नीचे उन्हें हनुमानजी के द र्शन हुए। इस प्रकार के किस्से गाँव-गाँव में प्रचलित हैं कि-"गाँव के पच्छिम माँऊँ एक बम्बा पै कोठी ऐ, ग्वा पै कैऊ पीपर ठाड़े ऐं,

थान बन रए ऐं, म्वाँ ते पीर निकरतु ऐ।"

पीपल को धर्म का द्वारा माना जाता है। शपथपूर्वक कहने के लिए पीपल की डाल पकड़कर सत्यनिष्ठा प्रकट की जाती है। गाँवों में पहले पंचायतें पीपल के नीचे की जाती थीं ताकि लोक झूठी गवाही न दें। ब्रज की अनेक जातियों में बालकों का 'मुंडन संस्कार' (मुड़ामन) पीपल के नीचे कराया जाता है।यदि किसी कन्या की कुण्डली 'मंगली दोष' अथवा अन्य कोई अनिष्ट दोष होता है तो उसके निवारण हेतु उस कन्या के 'फेरे' पहले पीपल के साथ डालने के बाद फिर विवाह की विधि सम्पन्न करायी जाती है।जिस प्रकार शालिग्राम-तुलसी के विवाह का अनुष्ठान कराया जाता है उसी प्रकार पीपल का जोड़े से अथवा नीम के साथ विवाह-अनुष्ठान भी कराया जाता है। लोकगीतों में पीपल-पूजा का अभिप्राय बहुप्रचलित है-

पीपर पूजन हम चलीं बाँयें बोलौ काग।
पीपर पूजत पिय मिलें एक पंथ दो काज।

अ शोक : 'अ शोक' कामदेव का प्रतीक है। विवाह आदि अवसरों पर अ शोक के पत्तों का बंदनवार बाँधा जाता है। कामदेव के हाथस में अ शोक का बाण है। संतान की कामना से स्त्रियाँ चैत्र शुक्ल अष्टमी को इसकी पूजा करती हैं तथा इसकी आठ पत्ती खाकर विश्वास किया जाता है कि उसके पुत्र उत्पन्न होगा। रावण की लंका में अ शोक वाटिका थी और 'सीता' को अ शोक वाटिका में रखा गया था। वे अ शोक वृक्ष के नीचे बैठती थीं-'सुनहु विनय मम विटप 'ओका'।' किंवदंती है कि अ शोक का फूल सुंदरी के पदाघात से फूलता है। इस अभिप्राय से युक्त प्राचीन प्रतिमाएँ 'पुरा-संग्रहालय' में विद्यमान हैं।[24]

निष्कर्ष

वट-वृक्ष भी पीपल के समान ही नारायण विष्णु का स्वरुप माना गया है। इसी वृक्ष के नीचे 'सावित्री' ने मृत्यु को जीतकर 'सत्यवान' का पुनर्जीवन प्राप्त किया था। ज्येष्ठ मास की अमावस्या (बड़मावस अथवा सावित्री व्रत) को दीवाल पर हल्दी-चावल के 'ऐंपन' से बड़ का चित्र बनाकर अथवा उसकी टहनी लाकर सौभाग्यवती स्त्रियाँ सुहाग की कामना से बड़ की पूजा करती हैं तथा बड़-वृक्ष उपलब्ध हो जाए तो वहाँ पौनी (कच्चा सूत) लपेटकर एक सौ आठ परिक्रमा करती हैं। पुराणों में शिव का आसन वट-वृक्ष के नीचे उल्लिखित है। पुराण प्रसिद्ध 'मार्कण्डेय मुनि' ने जो प्रलय-दर्शन किया था, उसमें 'प्रलयकाल' में केवल 'अक्षयवट' शेष था और सर्वत्र जल ही जल था। वट-वृक्ष के पत्ते पर 'बालमुकुंद' शयन कर रहे थे।

ब्रज में कहावत है कि-

वृंदावन सौ बन नहीं, नंद गाँव सौ गाँव।
वं शीवट सौ वट नहीं, कृष्ण नाम सौ नाम।

इसी व शं्ािवट के नीचे श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ रास किया था। भागवत-पुराण के व्याख्याकारों ने 'रास' के अभिप्राय की विस्तार से व्याख्या की है तथा 'विराट पुरुष', 'श्रीयंत्र' जैसे अभिप्रायों की भाँति अध्यात्म-विद्या के रुप में रास का विवेचन किया है। वट का

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 7.569|

|| Volume 10, Issue 7, July 2021 ||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2021.100327 |

अभिप्राय ' शास्र' में किस रुप में प्रतिष्ठित है, इसका एक उदाहरण वं शीवट तथा दूसरा उदाहरण 'अक्षयवट' है। भगवान बुद्ध के जीवन-प्रसंग में सुजाता की दासी ने गौतम बुद्ध को वृक्ष का देवता यक्ष समझकर खीर समर्पित की थी। ब्रज के 'भांडीर वन' में भांडीर यज्ञ का 'भांडीर वट' प्रसिद्ध है।'करवा चौथ' के व्रत में दीवाल पर वट का अभिप्राय अंकित किया जाता है, क्योंकि सात भाइयों ने 'अखैबर' के पेड़ पर चढ़कर ही दीपक दिखाया था। विष्णुसह शनाम में 'न्यग्रोधोदुंबरऽावत्थ:'। वट, पीपल तथा गूलर विष्णु के स्वरुप हैं। भागवत में वट को 'महायोगमय तथा मुमुक्षुओं का आश्रयभूत' कहा गया है। इस प्रकार ' शास्र' और 'लोक' दोनों में वट की महिमा प्राचीन का से प्रतिष्ठित है।[22]

दूब : श्रावण शुक्ला सप्तमी को 'दूर्वा-सप्तमी' या 'दूबरी सातें' कहा जाता है। 'दूबरी सातें' की कहानी में उल्लेख है कि 'दूबरी सातें' के दिना सबु बैयरबानी जुर मिल में दूब लैबे जाओ करतीं।'-२३ दूब को देवी का रुप माना गया है तथा इसकी पूजा से सुख-सम्पत्ति-संतान की प्राप्ति होती है। दूब गणे श को प्रिय है तथा गणे शजी की पूजा में दूब का होना अत्यंत आव श् यक माना जाता है। भविष्य पुराण की कथा है कि-"जब देवताओं ने 'क्षीरसागर-मंथन' किया, उस समय विष्णु भगवान ने अपनी पीठ पर 'मंदराचल' को धारण किया, उसकी रगड़ से भगवान के जो रोम उखड़कर जल में गिरे, उनसे दूब उत्पन्न हुई, उस दूब पर देवताओं ने 'अमृत के कुंभ' रखे, उस अमृत के स्पा से यह अजर-अमर हो गयी।" ब्रज की एक लोक कहानी है कि कौआ 'अमरौती' लेकर आया तो उसने दूब-घास पर रखकर ही अमरौती खायी थी। दूब को अजर-अमर माना गया है। दूब कितनी ही सूख जाए, एक बूँद जल से ही हरी हो जाती है। दूब उर्वरता की प्रतीक है तथा पुत्र-जन्म के उत्सव में 'नाई' परिजनों के कान पर दूब लगाकर दक्षिणा लेता है।[23,24]

संदर्भ

1) 'हरि की दटरानी नमो-नमो।' तुलसी पूजा के गीत से।
2) श्रीमती कलावती भुआजी, सासनी
3) इसीलिए इसी पूजा दाहरा के दिन की जाती है।
4) 'राधा' दामोदर वलि जइयै श्रीगोपाल प्रसाद व्यास : ब्रज विभव दिल्ली, हिंदी साहित्य सम्मेलन, पृ. ७०१
5) ब्रज के लोकमंगल का संसार (सं.-डॉ. विद्यानिवास मिश्र) क. मा. विद्यापीठ, आगरा विश्वविद्यालय,पृ. २५६-२५८
6) शिवपुराण रुद्र संहिता, अध्याय ४१
7) पद्मपुराण
8) भारतीय साहित्य (अक्टूबर १९६०) क. मा. विद्यापीठ, आगरा विश्वविद्यालय, पृ. २६७-२६८
9) ऋग्वेद १.६.४.२०, अथर्व, ९.९.२० श्वेता, ४.६ कठ. तृतीय बल्ली।
10) 'अश्वत्थ: सर्व वृक्षागाम्।' गीता अ. १० लो. २६
11) श्रीमती चंदोदेवी (७५ वर्ष) मथुरा।
12) भारतीय साहित्य, अक्टूबर १९६० (डॉ. सत्येंद्र), पृ. १९३
13) श्री बुद्धसेन ने अपने को पीपल गोती बतलाया था।
14) दे. लोका शास्र अंक (सं.-राजेंद्र रंजन), पृ. ११९-१३५
15) भागवत ९.१४.४४.४५
16) भागवत ११.३०.२७
17) लेखक द्वारा संकलित किस्मों से।
18) भागवत ४.६.३३
19) वही ३.३३.४ तथा म. भा. वन. १८८य९२
20) भारतीय साहित्य, अक्टूबर १९६०, पृ. ९१ तथा व्रतार्क, पृ. २४४
21) नगलागढ़ू गाँव : डहरवाले पंडितजी से सुना।
22) ब्रज की लोकवर्जनाएँ : राजेंद्र रंजन। ब्रजविभव, पृ. ६१७। आँवला किसी जाती का गणगोत्र था।
23) उस जाति के प्रति वैमनस्य भाव गणगोत्र के प्रतीक के प्रति रुपांतरित हो गया।
24) म.भ. गोपीनाथ कविराज : शक्ति का जागरण और कुंजलिनी, पृ. १९२

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor:
7.569

doi
crossref

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com